

आलेख - अपने जीवन के रणभूमि के कुशल योद्धा बनिए

जिंदगी वैसे तो जीने के लिए मिली है, हर लम्हों में जिंदगानी है। जीवित इंसान ही सपने देख सकते हैं उनमें रूचि, उत्साह, लगन और जिज्ञासा होती है। हर एक वह चीज जिससे उनकी भावनाएं जुड़ी होती हैं उसे देखने, सोचने और पाने के लिए वे बेचैन रहते हैं। खुश रहना ही हर इंसान की पहली चाहत होती है, अपनों के साथ हर पल को भरपूर और आनंदित होकर गुजार लेने की ईच्छा भला किसकी नहीं होगी? मन में एक ही समय में कई प्रकार की सोच उत्पन्न होती है।

कोई नहीं चाहते की दुख की नदिया ही बहती रहें उनके जीवन में। एक सुकुन, अपनेपन और सुखद माहौल में हर कोई सुंदर एहसास के साथ रहने की उम्मीद करते हैं। यही तो विशेषता है हर परिस्थिति में सामंजस्य, समझौता और संतुलन बनाकर चलते हैं। क्योंकि उनमें दिल, दिमाग, सक्रियता और जागरूकता है, जो उन्हें हर पल प्रेरित करती है। मौत तो बाद में आएंगी पहले इस जिंदगी को अपना तो बना लें, कुछ देर मुस्कुरा लें, जो बसे हैं इस हृदय में उनके साथ फुर्सत के कुछ पल तो बिता लें। अगर अपनों के लिए लगाव नहीं होता है, दिल किसी के लिए धड़कता नहीं, परवाह नहीं होती किसी को किसी की, यादों से स्पर्श नहीं होते तो सोचिए!

तक जी पाते।

याद रखिए! हर एक क्षण इसलिए जब तक जीवित हैं काम, गुजारिए जिंदगी। क्योंकि जो औरों हैं, खुद कष्ट सहन करते हैं, लेकिन निस्वार्थ रहते हुए सिर्फ अपनी जि-साधारण मनुष्य नहीं दिव्य आत्मा हैं। पुण्य कर्म के फल हैं की इस षड्यंत्र सोच और कर्म आपके हित में हैं। जो



तन्हा, बेनस लाचार, बेसहारा कब

वीरान होता है अपनों के बिना। क्रोध, भोग विलास घमंड में मत के लिए त्याग, तपस्य, समर्पण करते किसी के दुख का कारण नहीं बनते म्मेदारियों को निभाते हैं, वे कोई। जो हर किसी के नसीब में नहीं होते-से भरी दुनिया में कोई तो हैं जिनकी सम्मान करते हैं, समझते हैं और सच

में रिश्ता निभाते हैं। आपके लिए वफादार हैं, धोखा नहीं कर रहें।

आज के समय में पल भर देर नहीं करते लोग अपना व्यवहार बदलने में। देखकर भले ही आश्चर्य होता है, जमीं जायजाद, वसीयत, वसीयत धन दौलत के लिए एक दूसरे के जान के दुश्मन बन जाते हैं। आज के माहौल में नफरत, झूठ, षड्यंत्र की अधिकता है सच्चे और अच्छे इंसान से ज्यादा उन्हें दिखावे और ढोंग की जिंदगी जीने, भौतिक सुख सुविधा की है। इसलिए ज्यादा भावुक होने से भी बहुत तकलीफ का सामना करना पड़ता है।

अगर सोचे तो बहुत से काम अधूरे हैं। समय कम और अनंत इच्छाओं को खुद में समेटे हैं। हर एक सांस में जिंदगी हमें मौका देती है। सोचिए! कितना कीमती है हर एक लम्हा जो गुजर रही है। पर हम एक सार्थक, श्रेष्ठ और उस महान कार्य को करने में कदम बढ़ाने की बजाए उलझे हैं। सोच में डूबे हैं, सिर्फ कल्पनाओं में खोए हैं। निर्णय करना बेहद जरूरी है। इस पल को ही जीना है तो आत्मा की आवाज सुनिए! क्यूं न बाह्य आडंबर से दूर एक सुंदर सोच को विस्तार देने, मानव मात्र की भलाई के लिए आगे बढ़े। किसने क्या, क्यूं और कब कहां इस बात से जितना अधिक दूर रहेंगे? उतने ही हम अपनी मा-नसिकता का सही उपयोग कर पाएंगे। भूल, सुधार, सहयोग और विरोध के बीच ही एक नया राह बनाइए। ये मत सोचिए! बाधाएं कितनी हैं कैसे पार करेंगे? इस जीवन के रणभूमि के कुशल योद्धा बनिए। डरिए मत आपके विरोध में कौन खड़े हैं? बस अपने लक्ष्य को ध्यान दिजिए। अपने परिवार, समाज, कला, संस्कृति, संस्कार, परंपरा को बनाए रखने के लिए कार्य किजिए। मर मारकर मत जीना भी क्या जीना?

मन की हर उमंग को प्रवाहित होने दिजिए इन स्वतंत्र वादियों में। तोड़ दिजिए भेदभाव की लकीरें। आरोप प्रत्यारोप, शिकवे _ शिकायते, धर्म _ संप्रदाय के झगड़े , किसी को नीचा दिखाना। जलन रखना, बुराई करना, किसी को हतोत्साहित करना। एक बार सहयोग कीजिए मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने में , उन्हे समझने, भाईचारे का भाव स्थापित करने में। नारी के उत्थान , बेटियों की सुरक्षा, नशाखोरी, बेरोजगारी, बाल विवाह , अशिक्षा, छुआछूत , अमीरी _ गरीबी के भेदभाव, टूटते परिवार, छूटते अपने, बिखरते संस्कार, भटकते युवा वर्ग असहाय अवस्था में बुर्जुग। अपने जिम्मेदारी से भागते लोग , इस पर चिंतन चर्चा गहन मंथन और कार्य की ज़रूरत हैं ।

हम क्या कर रहे हैं _ किसी को भड़काने , गलत साबित करने , कमी निकालने, एक दूसरे के भावनाओं से खिलवाड़ , सही लोगो की उपेक्षा फिर कैसे स्वस्थ समाज की कल्पना कर सकते हैं? अगर विकास चाहते हैं तो एक जुट रहना ही होगा । अच्छे विचारों का सम्मान ज़रूरी हैं , अन्यथा यूं ही बिखरे _ उलझे , अलग और नाराज ही रहेंगे। किसने कब क्या गलत किया यह ज़रूरी नहीं? अब हमें क्या करना है उस दिशा में प्रयास ज़रूरी हैं। हर नियम _ कानून से ऊपर हैं इंसानियत का भाव हम इंसान हैं नवनिर्माण करें ।

एक दिन तो ढल ही जाएंगी ये जोश जवानी और सुंदर काया इसलिए हर पल को बेहतर करते रहिए। जो सिर्फ बुराई ढूँढते हैं और किसी अच्छे कार्य में बाधा बनते हैं सहयोगी नहीं होते हैं, दूसरो को आगे बढ़ते देख जो जलते हैं वे खुद से ही नज़र मिलाने लायक नहीं रहते , उनके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता, आत्मा शुद्ध नहीं होती मन में सही खयाल नहीं आते और उनकी मानसिकता कुंठित हो जाती है। प्रेम _ सद्भाव , सद्बिचार को साथ रखिए। जिस दिन _ आप बुराई को अपने दिल _ दिमाग से निकाल देने की ठान लेते हैं और औरों के हित करने की सोचते हैं, अपने जीवन को मूल्यवान बनाने कोशिश करते हैं। उसी क्षण आपके जीवन नई शुरुआत होती है। उसी दिन से नए विचार जन्म लेते हैं । जब हम सही दिशा तय करते हैं जिसमें निज स्वार्थ न होकर सर्व कल्याण का भाव होता है । तो हममें आंतरिक ऊर्जा प्रवाहित होती है। आत्म विश्वास बढ़ते हैं और उसमें रूचि उत्पन्न होते हैं। सच है _ जब हम किसी बुराई में लिप्त होते हैं या किसी का बुरा करने की सोचते हैं तब आत्मा हमें सचेत करती है और रोकने का प्रयास अवश्य करती है। एक बार जरूर खयाल आता है यह गलत है फिर फिर हम नहीं मानते और करते हैं तो उसी पल बर्बादी की तरफ हम बढ़ते हैं। हर पल जिंदगी को इस प्रकार बिताइए की याद करें जमाना। याद रखिए! आपके कर्म की गूंज इस संसार में स्वमेव होती है। जीत के लिए ही नहीं सिर्फ आत्म खुशी के लिए कार्य किजिए। उलझिए मत उन लोगो की बातों में जो खुद के जीवन को नहीं बना पाते। जिनकी सोच दूषित है जो किसी को प्रोत्साहित नहीं कर पाते। दूर रहिए उन लोगो से जो सिर्फ भड़काने, तोड़ने और नफरत फैलाने का काम करते हैं। जीवन की राह कठिन है लोगो की सोच भी विचित्र होती है , पर जब अपने कर्तव्य पथ पर चलते रहें तो हमें बहुत से अनुभव मिलते हैं। माना हर कोई साथ नहीं देते पर जो दे रहें वहीं पर्याप्त हैं, यह मानकर चले अकेले साहस किजिए । एक दिन जुड़ते जाएंगे लोग आपसे जब सफल होते जाएंगे। आज हम देखते हैं जगह जगह धार्मिक कार्य भजन कीर्तन, प्रवचन के कार्य में लोग बड़ी श्रद्धा से जाते हैं, शांत मन और हृदय में भक्ति भाव होता है। संत _ महात्मा, प्रवचकर्ता बहुत ही सुंदर ढंग से धार्मिक कथा सुनाते हैं ज्ञान की बात बताते हैं । जीवन को सुखी करने के उपाएं बताते हैं जिसे हम ध्यान से सुनते हैं उस भीड़ को देखकर ऐसे लगता है अब लोगो की सोच बदलेगी, अच्छे कार्य करेंगे, मन में प्रेम करूंगा , दया क्षमा _ स्नेह रखेंगे । लेकिन अक्सर सुनते तक ही वह बातें अच्छी लगती हैं बहुत कम लोग उसे अपने जीवन में उतारते हैं। ज्ञान की सारी बातें भूल जाते हैं।" कहते हैं न एक कान से सुने दूसरे से निकाल दिए "। बल्की अच्छी बातों को सुनकर उसे सहेज कर रखना चाहिए और बुराई को निकाल देना चाहिए लेकिन ऐसे होता बहुत कम है। सुनकर उसे जीवन में उतारने लगे तो मन की बहुत सी बुराई समाप्त हो जाएंगी। कोशिश किजिए हम किसी के लिए खुशी के कारण बनें दुख को उनके दूर कर सकें और मिलकर हर समस्या का सामाधान करते रहिए।

लेखिका/कवयित्री, सुश्री सरोज कंसारी
नवापारा राजिम जिला-रायपुर (छ. ग.) मो.-9131154880